Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ करवा चौथ व्रत के नियम ॥

॥ ॐ उमायै नमः ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ संकल्प और व्रत की तैयारी ॥

करवा चौथ का व्रत पति के मंगल और दांपत्य की सुख-शांति की कामना से किया जाता है। इसका आधार श्रद्धा और स्वेच्छा है। नीचे दिए नियम सामान्य मार्गदर्शन हैं; अपने परिवार की परंपरा और स्वास्थ्य की स्थिति को साथ में ध्यान रखें।

१. तिथि और समय की जानकारी लें

अपने शहर के पंचांग में करवा चौथ की तिथि, सूर्योदय, पूजा का समय और चंद्रोदय देखें। दूसरे शहर का समय अपने स्थान पर लागू न मानें। पारंपरिक व्रत सूर्योदय से चंद्र दर्शन और अर्घ्य तक रखा जाता है।

२. सरगी की पारिवारिक रीति

पंजाब और कुछ अन्य क्षेत्रों में सरगी का विशेष स्थान है। जिस परिवार में यह परंपरा हो, वहाँ इसे सूर्योदय से पहले ग्रहण करें। सरगी में मिलने वाली वस्तुएँ और उसे देने की रीति अलग हो सकती है। सभी परिवारों में सरगी अनिवार्य नहीं होती।

३. सोच-समझकर संकल्प लें

स्नान के बाद स्वच्छ वस्त्र पहनकर शांत मन से माता गौरी को प्रणाम करें। व्रत, पूजा और कथा-पाठ का संकल्प अपनी परिस्थिति के अनुसार लें। किसी की नकल, तुलना या दबाव में कठिन उपवास करने का निर्णय न करें।

पूजा की सामग्री और घर के काम पहले व्यवस्थित करने से व्रत वाले दिन पर्याप्त विश्राम और पूजा के लिए समय मिल सकता है।

॥ आहार, आचरण और स्वास्थ्य ॥

४. निर्जला व्रत की परंपरा समझें

परंपरागत निर्जला व्रत में चंद्र अर्घ्य तक अन्न और जल ग्रहण नहीं किया जाता। यह कठिन उपवास है और हर व्यक्ति के लिए उपयुक्त नहीं होता। जल या फलाहार लेकर रखे जाने वाले व्रत को निर्जला न कहें; अपनी परिस्थिति के अनुसार अपनाई गई रीति स्पष्ट रखें।

५. स्वास्थ्य और आवश्यक उपचार

बीमारी, गर्भावस्था, स्तनपान या नियमित दवाओं की स्थिति में उपवास से पहले चिकित्सक की सलाह लें। दवाएँ स्वयं बंद न करें। अस्वस्थ होने पर उपवास जारी रखने की जिद न करें और जरूरत पड़ने पर चिकित्सा सहायता लें। पूजा और प्रार्थना बिना कठिन उपवास के भी की जा सकती है।

६. व्यवहार में संयम रखें

दिनभर सत्य, मधुर वाणी और सद्भाव का अभ्यास करें। विवाद, अपमान और दूसरों के व्रत की आलोचना से बचें। परिवार के सदस्य व्रती को आराम और सहयोग दें। व्रत को प्रेम और जिम्मेदारी बाँटने का अवसर बनाएँ।

७. वस्त्र और श्रृंगार

स्वच्छ और सुविधाजनक वस्त्र पहनें। मेहंदी, सिंदूर, चूड़ियाँ या अन्य श्रृंगार अपनी इच्छा और परंपरा के अनुसार करें। महँगे वस्त्र, गहने या उपहार पूजा की शर्त नहीं हैं। किसी अलग रीति को देखकर अनिष्ट की आशंका न करें।

॥ पूजा, पारण और आवश्यक बातें ॥

८. पूजा और कथा में श्रद्धा

अपने परिवार की रीति से माता गौरी या चौथ माता का पूजन करें और कथा पढ़ें या सुनें। पूजा में दीपक, धूप और करवा सुरक्षित ढंग से रखें। करवे की संख्या, बायना, थाली फेरना और कथा का समय क्षेत्रीय परंपराओं के अनुसार बदल सकता है।

९. चंद्र अर्घ्य के बाद पारण

पारंपरिक विधान में स्थानीय चंद्रोदय पर दर्शन और अर्घ्य के बाद व्रत खोला जाता है। इंटरनेट पर दिखाई गई किसी दूसरे स्थान की चंद्रमा की तस्वीर को अपने स्थान का दर्शन न मानें। बादल हों या दर्शन संभव न हों तो स्थानीय धार्मिक मार्गदर्शन लें।

१०. भूल या असमर्थता की स्थिति

अनजाने में कुछ खा-पी लिया हो या स्वास्थ्य के कारण व्रत खोलना पड़े तो स्वयं को दोष देकर भयभीत न हों। व्रत की किसी भूल को परिवार में होने वाली बीमारी या अनिष्ट का कारण न मानें। आगे की पूजा के लिए परिवार के जानकार व्यक्ति या पंडित से सलाह ले सकते हैं।

११. उद्यापन की परंपरा

उद्यापन का समय, सामग्री और विधि सभी परिवारों में समान नहीं होते। वर्षों की कोई निश्चित संख्या सबके लिए लागू न मानें। इस विषय में अपने परिवार की परंपरा के अनुसार जानकारी लें। श्रद्धा के साथ सेवा, दान और परस्पर सम्मान बनाए रखें।

॥ ॐ उमायै नमः ॥